जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख
धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण
और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,
अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर
उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN
9993602663
77229 83010
SOURABHJN1989@GMAIL.COM

सप्त ऋषि पूजा

जिनगीतिका छन्द

सुरमन्यु मुनि श्रीमन्यु मुनिवर, श्रीनिचय ऋषिराज जी।
मुनि सर्वसुन्दर साधु जयवान्, विनयलालस राज जी ॥
जयमित्र ऋषिवर सात भ्राता, सप्त ऋषि की वन्दना।
पितु भूप श्रीनन्दन श्रमण की, हम करें शुभ अर्चना ॥

ओं ह्रीं सप्तमहाऋषीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

सखी छन्द

मुनि ईर्या समिति सम्हालें, भू चार हाथ लख चालें।
सुरमन्यु आदि मुनिराजा, मेरे भव जलधि जहाजा ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित वच बोलें प्यारे, वचनावलि अमृत धारे।
श्रीमन्यु साधु गुणधारी, संसार ताप हरतारी ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

छ्यालीस दोष जब टालें, तब भिक्षा विधि को पालें।
श्रीनिचय श्रमण बड़भागी, रत्नत्रय निधि अनुरागी ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपकरण रखें या लेवें, तब देख शोध कर लेवें।
ऋद्धीश सर्वसुन्दर को, हम पूज रहे गुणधर को ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि पालें समिति प्रतिष्ठा, है धर्म अहिंसा निष्ठा।
जयवान छठे ऋषिराजा, तप करें महा मुनिराजा ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मनोगुप्ति के धारी, अज्ञान तिमिर परिहारी।

ऋषि नमूँ विनयलालस को, तज दूँ दुखकर आलस को ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यति वचोगुप्ति को पालें, हिंसादि दोष को टालें।
जयमित्र महाऋषिराजा, मैं पूजूँ निज हित काजा ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि काय गुप्ति को धारें, सब विध चारित्र सम्हारें।
श्रीनन्दन पितु मुनि प्यारे, अर्हद् बन मोक्ष पधारे ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि सहित श्रीनन्दन, जिनका करते हम वन्दन।
सुरमन्यु आदि ऋषि मेरे, मेटो भव भव के फेरे ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (यशोगान)

दोहा

सप्तर्षि ऋषिराज की, कथा कहूँ सुखकार।
गुम्फित पद्मपुराण से, सुनो भव्य हितधार ॥

सन्मति छन्द (पद्धरि)

इक नगर प्रभापुर ख्यात जान, श्रीनन्दन नृप तहाँ चरितवान।
रानी धरणी थी बुद्धिमान, थी व्रती श्राविका गुणनिधान ॥
शुभ पुण्य योग से हुए पुत्र, सातों करते कुल भू पवित्र।
प्रीतिंकर मुनि कैवल्य पाय, उत्सव करने सुर देव आय ॥
तप का फल केवलज्ञान मान, सुत सहित पिता प्रतिबुद्धजान।
मासायु पौत्र को राज्य दान, हुए पौत्र डमर मंगल प्रधान ॥
दीक्षा लेते सुत तात साथ, प्रीतिंकर पद में रखा माथ ।
सुरमन्यु आदि सातों ऋषीश, सह पितु श्रीनन्दन भी मुनीश ॥
आठों ने तप को धरा साथ, पितु मोक्ष पधारे बने नाथ ।

सम्यक्त्व ज्ञान चारित्र पाय, रत्नत्रय से भूषित सुहाय ॥
सातों मुनि तप से ऋद्धि पाय, तब सप्त ऋषीश प्रसिद्धिजाय।
सप्तर्षि नाम से ख्यात सन्त, वन्दे सुर नर मुनि चरितवन्त ॥
मथुरा नगरी के मधु नरेन्द्र, इनका सुमित्र था चमर इन्द्र ।
था सहस्त्र-अन्तक शूलरत्न, चमरेन्द्र दिया मधु को सुरत्न ॥
श्री राम अयोध्या में सुहाय , लंका सु जीत गृह नगर आय ।
सबको कहते लो राज्य क्षेत्र, फैलाओ अपने ज्ञान नेत्र ॥
शत्रुघ्न कहें मथुरा सुहाय, जहँ मधु राजा रहता बताय ।
तब राज्य प्राप्ति को युद्ध ठान, मधु निजसुत को प्राणान्तजान॥
मधु गजारूढ होता विरक्त, कचलोंच किया तपकरण शक्त ।
लौटा देखा जब शूलरत्न, चमरेन्द्र जान गया विफल यत्न ॥
मारी फैलायी मरणकार, नर पशु मरते जाते अपार।
फैली मथुरा में महामारि, चमरेन्द्र बना पशु नर सँहारि ॥
मथुरा में सप्त ऋषीश आय, मारी प्रकोप तब शीघ्र जाय।
यह चर्चा फैली देश-देश, पूजित होते ऋषि सब प्रदेश ॥
तप से पायी औषध सुऋद्धि, नीरोग करें ऋषिवर प्रसिद्धि।
श्रद्धा से मुनि की करें सेव, हो स्वस्थ देह कहें सूरिदेव ॥
आकाश गमन की ऋद्धि धार, सातों मुनि साथ करें विहार।
उपवास पारणा राम गेह, आहार दिया सीता सनेह ॥
आहार दान दे हुए धन्य , ऋषि राम सिया द्वारा प्रणम्य ।
मृदुभावों से पूजन रचाय, विद्यासागर गुरु हुए सहाय ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कथा सप्त ऋषिराज की, पढ़ो सुनो मन धार।
सप्तर्षि व्रत को करो सप्त सप्तमी द्वार ॥

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

❋❋❋